

बीज की मात्रा: मसूर का भरपूर उत्पादन पाने के लिए पौधों की संख्या का पर्याप्त होना आवश्यक है। इसके लिए बड़े दानों वाली जाति का 50-60 कि.ग्राम. एवं छोटे दाने वाली जाति का 35-40 कि.ग्राम. बीज प्रति हेक्टेयर बोना चाहिए। बोआई कतार में करना चाहिए व कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. रखना चाहिए। देरी से बुआई करने पर 20-25 से.मी. कतारों की दूरी रखना चाहिए। बुआई नारी या सीड ड्रिल से 5-6 से.मी. की गहराई पर उपयुक्त होती है।

मृदा उपचार: गर्मी में गहरी जुताई करें। मृदा जनित रोगों से बचने के लिए यह अति आवश्यक तकनीक है। इसके लिए दो कि.ग्राम. ट्राइकोडरमा विरडी या ट्राइकोडरमा हारजीयानम को 100 कि.ग्राम. गोबर की सड़ी खाद या बायो गैस स्लरी में मिलाकर नम करके एक सप्ताह तक ढककर अंधरे स्थान में रखें तत्पश्चात बुआई से पूर्व खेत में फैलायें जिससे मृदा जनित रोगों की रोकथाम हो जाये।

बीजोपचार: मसूर में मुख्य रूप से उक्टा रोग का प्रकोप होता है जिससे कमी कमी सत्प्रतिशत हानि हो जाती है। इसलिये बुआई के लिए बीजोपचार अति आवश्यक है। दो ग्राम थायरम एवं 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम के अनुपात में मिलाकर प्रतिकिलों बीज की दर से उपचारित करें। तत्पश्चात 5 ग्राम राईजोवियम एवं 5 ग्राम पीएसवी कल्चर प्रतिकिलों ग्राम बीज की दर से मिलाकर थोड़ा पानी छिड़कर अच्छी तरह से मिलायें। जिससे कल्चर बीज से चिपक जायें। इस तरह बीजोपचार के बाद बीज को छाया में सुखा कर फिर बोनी करें।

खाद एवं उर्वरक: मृदा उपचार के बाद मिटटी परीक्षण के आधार पर की गई अनुमोदन के अनुसार ही खाद उर्वरक देना चाहिए। 100-125 कि. प्रति हेक्टेयर के हिसाब से गोबर की खाद या कम्पोस्ट खाद अवश्य देना चाहिए। गोबर खाद देने पर उर्वरकों की मात्रा आधी करना उचित होगा। सिंचित फसल के लिये 20-25 कि.ग्राम. नत्रजन एवं 30-40 कि.ग्राम. फास्फोरस का उपयोग प्रति हेक्टेयर करना चाहिये। गंधक की कमी वाले क्षेत्रों में 20 कि.ग्राम. गंधक सिंगल सुपर फास्फेट देना चाहिए।

सिंचाई: सामान्यतः मसूर की फसल असिंचित क्षेत्रों में ही ली जाती है। इसलिए यदि सिंचाई सुलभ हो तो बुआई पलेवा लगाकर करना चाहिए इससे मिटटी में नमी बनी रहे एवं अकुरण अच्छा होता है। मसूर में इसके बाद सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है अगर पानी उपलब्ध हो तो एक सिंचाई फूल आने के पहले (बोनी के 40-45 दिन बाद) देने से उपज अच्छी होती है। यदि वरसात हो जाए तो सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। अधिक सिंचाई मसूर को हानि पहुंचा सकती है।

निराई-गुड़ाई: रासायनिक खरपतवार नियंत्रण के लिए बुआई से पूर्व फ्लूक्लोरेलिन 0.75 कि.ग्राम. सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर 600 लि. पानी में घोलकर छिड़काव करें। इस फसल में बोनी के बाद 50 दिनों तक खरपतवारों को नियंत्रण में रखना चाहिए नहीं तो

इसकी बडवार में दुष्प्रभाव पड़ेगा। मसूर में खरपतवार की समस्या सिंचित फसल या वर्षा होने पर हो सकती है। ऐसी स्थिति में 'हो यंत्र' एवं 'हो साइकिल यंत्र' चलाकर खरपतवार नियंत्रण करना चाहिए। इससे गुड़ाई भी हो जाएगी। भूमि में वायु संचार बढ़ेगा जो कि स्वास्थ्य के लिये अति आवश्यक है।

रोग नियंत्रण: मसूर में मुख्य रूप से उक्टा रोग का प्रकोप होता है। इसके लिये मृदा उपचार एवं बीजोपचार अति आवश्यक है। किस्मों के चयन में सिर्फ उक्टा प्रतिरोधी जातियों का ही चयन करें, फसल चक्र बदलने से भी उक्टा रोग कम हो सकता है। कभी-कभी गेरूआ रोग का भी प्रकोप होता है इसके नियंत्रण के लिए 1.2-5 ग्राम डायथिन एम 45 प्रति लिटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर फसल में छिड़काव करना चाहिए। गेरूआ प्रभावित क्षेत्रों में एल-4076 गेरूआ निरोधक जाति बोयें।

कीट नियंत्रण: मसूर में फली छेदक कीट, पत्ती छेदक एवं माहों का प्रकोप होता है। इसके लिए मोनो क्रोटोफॉस 1 मिली लिटर/ लिटर पानी में या मैटसिटाक्स 1.5 मि.ली./ लिटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। फली छेदक कीटों के लिए किनालफास 1 मि.ली पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करने से कीट नियंत्रित हो जाते हैं।

कटाई एवं गहाई: परिपक्व अवस्था में मसूर की फसल हरे से भुरे रंग की होने लगती है। तब फसल की कटाई सुबह जब थोड़ी ठंड एवं नमी रहती है, तब करना चाहिए जिससे बीज कम झड़ते हैं। फसल को काटकर खलिहान में अच्छे से सुखाना चाहिए। फिर डंडों से पीटकर एवं बैलों से गहाई करवाकर पंखे से साफ करना चाहिए दांतों के बीज को रखकर काटने से यदि कट की आवाज आये तो भण्डारण के लिये उचित मानना चाहिये।

उपज: कृषि की उन्नत तकनीकों को अपनाकर मसूर फसल से भरपूर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। किस्म के अनुसार बारानी क्षेत्रों में 8-10 किंवटल व सिंचाई करने पर 15-16 किंवटल मसूर की उपज प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है।

— विनोद कुमार एवं स्मिता पुरी

क्षेत्रिय कृषि अनुसंधान केन्द्र, जे.एन.के.वी.वी., सागर (म.प्र.)

शीत ऋतु गन्ना की खेती

गन्ना एक प्रमुख व्यवसायिक फसल है। विषम परिस्थितियां भी गन्ना की फसल को बहुत अधिक प्रभावित नहीं कर पातीं। इन्ही विशेष कारणों से गन्ना की खेती अपने आप में सुरक्षित व लाभ की खेती है।

गन्ना फसल उत्पादन की प्रमुख समस्याएँ:

- अनुमोदित जातियों का उपयोग न करना व पुरानी जातियों पर निर्भर रहना।
- रोगरोधी उपयुक्त किस्मों की उन्नत बीजों की अनुपलब्धता। बीजो उत्पादन कार्यक्रम का अभाव। बीज उपचार न करने से बीज जनित रोगों व कीड़ों का प्रकोप अधिक एवं एकीकृत पौध

संरक्षण उपायों को न अपनाना। कतार से कतार कम दूरी व अंतरवर्तीय फसलें न लेने से प्रति हे. उपज व आय में कमी। पोषक तत्वों का संतुलित एवं एकीकृत प्रबंधन न किया जाना।

- उचित जल निकास एवं सिंचाई प्रबंधन का अभाव। उचित जड़ी प्रबंधन का अभाव। गन्ना फसल के लिए उपयोगी कृषि यंत्रों का अभाव जिसके कारण श्रम लागत अधिक होना।

गन्ना फसल ही क्यों चुनें: गन्ना एक प्रमुख बहुवर्षीय फसल है। अच्छे प्रबंधन से साल दर साल 1,50,000 रुपये प्रति हेक्टेयर से अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। प्रचलित फसल चक्रों जैसे मक्का-गेंहू या धान-गेंहू, सोयाबीन-गेंहू की तुलना में अधिक लाभ प्राप्त होता है। यह निम्नतम जोखिम भरी फसल है जिस पर रोग, कीट ग्रस्तता एवं विपरीत परिस्थितियों का अपेक्षाकृत कम असर होता है। गन्ना के साथ अन्तवर्तीय फसल लगाकर 3-4 माह में ही प्रारंभिक लागत मूल्य प्राप्त किया जा सकता है। गन्ना की किसी भी अन्य फसल से प्रतिस्पर्धा नहीं है। वर्ष भर उपलब्ध साधनों एवं मजदूरों का सदुपयोग होता है।

उपयुक्त भूमि, मौसम व खेत की तैयारी:

उपयुक्त भूमि – गन्ने की खेती मध्यम से भारी काली मिट्टी में की जा सकती है। दोमट भूमि जिसमें सिंचाई की उचित व्यवस्था व जल का निकास अच्छा हो, तथा पी.एच. मान 6.5 से 7.5 के बीच हो, गन्ने के लिए सर्वोत्तम होती है।

उपयुक्त मौसम – गन्ने की बुआई वर्षा में दो बार किया जा सकता है। शरदकालीन बुआई इसमें अक्टूबर-नवम्बर में फसल की बुवाई करते हैं और फसल 10-14 माह में तैयार होती है। बसंत कालीन बुआई: इसमें फरवरी से मार्च तक फसल की बुवाई करते हैं। इसमें फसल 10 से 12 माह में तैयार होता है। शरदकालीन गन्ने, बसंत में बोये गये गन्ने से 25-30 प्रतिशत व ग्रीष्मकालीन गन्ने से 30-40 प्रतिशत अधिक पैदावार देता है।

खेत की तैयारी: खेत की ग्रीष्मकाल में अप्रैल से 15 मई के पूर्व एक गहरी जुताई करें। इसके पश्चात् 2 से 3 बार देशी हल या कल्टीवेटर, से जुताई कर तथा रोटावेटर व पाटा चलाकर खेत को भुरभुरा, समतल एवं खरपतवार रहित कर लें एवं रिजर की सहायता से 3 से 4.5 फुट की दूरी में 20-25 से.मी. गहरी कूड़े बनाये। उपयुक्त किस्म, बीज का चयन, व तैयारी-गन्ने के सारे रोगों की जड़ अस्वस्थ बीज का उपयोग ही है। गन्ने की फसल उगाने के लिए पूरा तना न बोकर इसके दो या तीन आंख के टुकड़े काटकर उपयोग में लायें। गन्ने ऊपरी भाग की अंकुरण 100 प्रतिशत, बीच में 40 प्रतिशत और निचले भाग में केवल 19 प्रतिशत ही होता है। दो आंख वाला टुकड़ा सर्वोत्तम रहता है।

गन्ना बीज का चुनाव करते समय सावधानियां:

- उन्नत जाति के स्वस्थ निरोग शुद्ध बीज का ही चयन करें।
- गन्ना बीज की उम्र लगभग 8 माह या कम हो तो अंकुरण अच्छा होता है। बीज ऐसे खेत से लेवें जिसमें रोग व कीट का

प्रकोप न हो एवं जिसमें खाद पानी समुचित मात्रा में दिया जाता रहा हो।

- जहां तक हो नर्म गर्म हवा उपचारित (54 से.ग्रे. एवं 85 प्रतिशत आर्द्रता पर 4 घंटे) या टिश्यूकल्चर से उत्पादित बीज का ही चयन करें।
- हर 4-5 साल बाद बीज बदल दें क्योंकि समय के साथ रोग व कीट ग्रस्तता में वृद्धि होती जाती है।
- बीज काटने के बाद कम से कम समय में बोनी कर दें।

गन्ने की उन्नत जातियां: को. 05011 (कर्ण-9), को.से. 11453, को.शा. 12232, को.शा. 08276, यू.पी. 05125, को. 0238 (कर्ण-4), को. 0118 (कर्ण-2), को.से. 98231, को.शा. 08279, को.शा. 07250, को.शा. 8432, को.शा. 96269 (शाहजहाँ), को.शा. 96275 (स्वीटी) ये प्रजातीय उत्तर प्रदेश के लिए संस्तुति की गई हैं।

गन्ना बुवाई का सबसे उपयुक्त समय: अक्टूबर-नवम्बर ही क्यों चुनें?

- फसल में अग्रवेधक कीट का प्रकोप नहीं होता।
- फसल वृद्धि के लिए अधिक समय मिलने के साथ ही अंतरवर्तीय फसलों की भरपूर संभावना।
- अंकुरण अच्छा होने से बीज कम लगता है एवं कल्ले अधिक फूटते हैं।
- अच्छी बढ़वार के कारण खरपतवार कम होते हैं।
- सिंचाई जल की कमी की दशा में, देर से बोयी गई फसल की तुलना में नुकसान कम होता है।
- फसल के जल्दी पकाव पर आने से कारखाने जल्दी पिराई शुरू कर सकते हैं।
- जड़ फसल भी काफी अच्छी होती है।

बीज की मात्रा: 75-80 कुंतल/हे. 2 आंख वाले टुकड़े लगेंगे।

बीजोपचार: बीज जनित रोग व कीट नियंत्रण हेतु कार्बेन्डाजिम 2 ग्रा/ लीटर पानी व क्लोरोपायरीफास 5 मि.ली./ली की दर से घोल बनाकर आवश्यक बीज का 15 से 20 मिनट तक उपचार करें।

खाद एवं उर्वरक: फसल के पकने की अवधि लम्बी होने के कारण खाद एवं उर्वरक की आवश्यकता भी अधिक होती है। अतः खेत की अंतिम जुताई से पूर्व 20 टन सड़ी गोबर/कम्पोस्ट खाद खेत में समान रूप से मिलाना चाहिए। इसके अतिरिक्त 180 किलो नत्रजन (323 कि.ग्रा. यूरिया), 80 कि.ग्रा.फास्फोरस, (123 कि.ग्रा DAP) एवं 60 कि. पोटाश (100 कि.ग्रा. म्यूरेटआपपोटाश) प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए। फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय प्रयोग करें एवं नत्रजन की मात्रा को निम्नानुसार प्रयोग करें।

शरदकालीन गन्ना: शरदकालीन गन्ने में नत्रजन की कुल मात्रा को चार समान भागों में विभक्त कर बोनी के क्रमशः 30, 90, 120 एवं 150 दिन में प्रयोग करें।

बसन्तकालीन गन्ना: बसन्तकालीन गन्ने में नत्रजन की कुल मात्रा को तीन समान भागों में विभक्त कर बोनी क्रमशः 30, 90 एवं 120 दिन में प्रयोग करें।

नत्रजन उर्वरक के साथ नीमखली के चूर्ण मिलाकर प्रयोग करने में नत्रजन उर्वरक की उपयोगिता बढ़ती है साथ ही दीमक से भी सुरक्षा मिलती है। 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट व 50 कि.ग्रा. फेरस सल्फेट 3 वर्ष के अंतराल में जिंक व आयरन सूक्ष्म तत्व की पूर्ति के लिए आधार खाद के रूप में बुवाई के समय उपयोग करें।

विशेष सुझाव: मृदा परीक्षण के आधार पर ही आवश्यक तत्वों की आपूर्ति करें। स्फुर तत्व की पूर्ति सिंगल सु.फा.फे. उर्वरक के द्वारा करने पर 12 प्रतिशत गंधक तत्व (60 कि.ग्रा./हे.) अपने आप उपलब्ध हो जाता है। जैव उर्वरकों की अनुशासित मात्रा को 150 कि.ग्रा. वर्मी कम्पोस्ट या गोबर खाद के साथ मिश्रित कर 1-2 दिन नम कर बुवाई पूर्व कुड़ों में या प्रथम मिट्टी चढ़ाने के पूर्व उपयोग करें। जैव उर्वरकों के उपयोग से 20 प्रतिशत नत्रजन व 25 प्रतिशत स्फुर तत्व की आपूर्ति होने के कारण रसायनिक उर्वरकों के उपयोग में तदनुसार कटौती करें। जैविक खादों की अनुशासित मात्रा उपयोग करने पर नत्रजन की 100 कि.ग्रा./हे. रसायनिक तत्व के रूप में कटौती करें।

जल प्रबंधन: सिंचाई व जल निकास-गर्मी के दिनों में भारी मिट्टी वाले खेतों में 8-10 दिन के अंतर पर एवं ठंड के दिनों में 15 दिनों के अंतर से सिंचाई करें। हल्की मिट्टी वाले खेतों में 5-7 दिनों के अंतर से गर्मी के दिनों में व 10 दिन के अंतर से ठंड के दिनों में सिंचाई करना चाहिये। सिंचाई की मात्रा कम करने के लिये गरेडों में गन्ने की सूखी पत्तियों की पलवार की 10-15 से.मी. तह बिछायें। गर्मी में पानी की मात्रा कम होने पर एक गरेड छोड़कर सिंचाई देकर फसल बचावें। कम पानी उपलब्ध होने पर ड्रिप (टपक विधि) से सिंचाई करने से भी 60 प्रतिशत पानी की बचत होती है।

गर्मी के मौसम तक जब फसल 5-6 महीने तक की होती है स्प्रिंकलर (फव्वारा) विधि से सिंचाई करके 40 प्रतिशत पानी की बचत की जा सकती है। वर्षा के मौसम में खेत में उचित जल निकास का प्रबंध रखें। खेत में पानी के जमाव होने से गन्ने की बढ़वार एवं रस की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

खाली स्थानों की पूर्ति - कभी-कभी पंक्तियों में कई जगहों पर बीज अंकुरित नहीं हो पाता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए खेत में गन्ने की बुआई के साथ-साथ अलग से सिंचाई स्रोत के नजदीक एक नर्सरी तैयार कर लें। इसमें बहुत ही कम अंतराल पर एक आंख के टुकड़ों की बुवाई करें। खेत में बुवाई के एक माह बाद खाली स्थानों पर नर्सरी में तैयार पौधों को

सावधानी पूर्वक निकाल कर रोपाई कर दें।

खरपतवार प्रबंधन: अंधी गुड़ाई: गन्ने का अंकुरण देर से होने के कारण कभी-कभी खरपतवारों का अंकुरण गन्ने से पहले हो जाता है। जिसके नियंत्रण हेतु एक गुड़ाई करना आवश्यक होता है, जिसे अंधी गुड़ाई कहते हैं।

निराई: गुड़ाई: आमतौर पर प्रत्येक सिंचाई के बाद एक गुड़ाई आवश्यक होगी। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि व्यांत अवस्था (90-100 दिन) तक निराई-गुड़ाई का कार्य कर लें।

मिट्टी चढ़ाना: वर्षा प्रारम्भ होने तक फसल पर मिट्टी चढ़ाने का कार्य पूरा कर लें (120 व 150 दिन)।

रासायनिक नियंत्रण: बुवाई पश्चात अंकुरण पूर्व खरपतवारों के नियंत्रण हेतु एट्राजीन 2.0 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर के हिसाब से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर बुआई के एक सप्ताह के अन्दर खेत में समान रूप से छिड़काव करें। खड़ी फसल में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के लिए 2-4-डी सोडियम साल्ट 2.8 कि.ग्रा./हे. के हिसाब से 600 लीटर पानी का घोल बनाकर बुवाई के 45 दिन बाद छिड़काव करें। खड़ी फसल में चौड़ी-सकरी मिश्रित खरपतवार के लिए 2-4-डी सोडियम साल्ट 2.8 कि.ग्रा. या मेटेडायलिन 1 कि.ग्रा./हे. के हिसाब से 600 लीटर पानी का घोल बनाकर बुवाई के 45 दिन बाद छिड़काव करें।

उपरोक्त खरपतवार नाशकों के उपयोग के समय खेत में नमी आवश्यक है।

अन्तरवर्ती खेती: गन्ने की फसल की बढ़वार शुरू के 2-3 माह तक धीमी गति से होता है। गन्ने के दो कतारों के बीच का स्थान काफी समय तक खाली रह जाता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए यदि कम अवधि के फसलों को अन्तरवर्ती खेती के रूप में उगाया जाये तो निश्चित रूप से गन्ने के फसल के साथ-साथ प्रति इकाई अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हो सकता है। इसके लिये निम्न फसलें अन्तरवर्ती खेती के रूप में ऊगाई जा सकती हैं।

शरदकालीन खेती: गन्ना: आलू (1:2), गन्ना: प्याज (1:2), गन्ना: मटर (1:1), गन्ना: धनिया (1:2), गन्ना: चना (1:2), गन्ना: गेहूँ (1:2)

बसन्त कालीन खेती: गन्ना: मूंग (1:1), गन्ना: उड़द (1:1), गन्ना: धनिया (1:3), गन्ना: मेथी (1:3)

गन्ने को गिरने से बचाने के उपाय:

- गन्ना के कतारों की दिशा पूर्व-पश्चिम रखें।
- गन्ना की उथली बोनी न करें।
- गन्ना के कतार के दोनों तरफ 15 से 30 से.मी. मिट्टी दो बार (जब पौधा 1.5 से 2 मीटर का (120 दिन बाद) हो तथा इससे अधिक बढ़वार होने पर चढ़ायें (150 दिन बाद)।
- गन्ना की बंधाई करें इसमें तनों को एक साथ मिलाकर पत्तियों के सहारे बांध दें। यह कार्य दो बार तक करें।

- पहली बंधाई अगस्त में तथा दूसरी इसके एक माह बाद जब पौधा 2 से 2.5 मीटर का हो जाये।
- बंधाई का कार्य इस प्रकार करें कि हरी पत्तियों का समूह एक जगह एकत्र न हो अन्यथा प्रकाश संश्लेषण क्रिया प्रभावित होगी।

गन्ने की कटाई: फसल की कटाई उस समय करें जब गन्ने में सुक्रोज की मात्रा सबसे अधिक हो क्योंकि यह अवस्था थोड़े समय के लिये होती है और जैसे ही तापमान बढ़ता है सुक्रोज का ग्लूकोज में परिवर्तन प्रारम्भ हो जाता है और ऐसे गन्ने से शक्कर एवं गुड़ की मात्रा कम मिलता है। कटाई पूर्व पकाव सर्वेक्षण करें। इस हेतु रिफ्लेक्टोमीटर का उपयोग करें यदि माप 18 या इसके उपर है तो गन्ना परिपक्व होने का संकेत है। गन्ने की कटाई गन्ने की सतह से करें।

उपज: गन्ने उत्पादन में उन्नत वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग कर लगभग 1000 से 1500 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक गन्ना प्राप्त किया जा सकता है।

जड़ी फसल से भरपूर पैदावार: जड़ी फसल पर भी बीजू फसल की तरह ही ध्यान दें और बताये गये कम लागत वाले उपाय अपनायें, तो जड़ी से भरपूर पैदावार ले सकते हैं –

समय पर गन्ने की कटाई: मुख्य फसल को समय पर (नवम्बर माह में) काटने से पेड़ी की अधिक उपज ली जा सकती है। जड़ी फसल दो बार से अधिक न लें गन्ने की कटाई सतह जाति के लगाकर सिंचाई करें। मुख्य फसल के लिए अनुशंसा अनुसार पर्याप्त उर्वरक दें सूखी पत्ती बिछायें: कटाई के बाद सूखी पत्तियों को खेत में जलाने के बजाय कूड़ों के मध्य बिछाने से उर्वरा शक्ति में वृद्धि होती है। उक्त सूखी पत्तियां बिछाने के बाद 1.5 प्रतिशत क्लोरपायरीफॉस का प्रति हेक्टेयर दवा का भुरकाव करें।

पौध संरक्षण अपनार्ये: कटे हुए टूटे पर कार्बेन्डाजिम 550 ग्राम मात्रा 250 लीटर पानी में घोलकर झारे की सहायता से ठँठों के कटे हुये भाग पर छिड़कें।

जड़ी के लिये उपयुक्त जातियां: जड़ी की अधिक पैदावार लेने हेतु उन्नत जातियां जैसे को-7318, को-86032, को.जे.एन. 86 – 141, को-जे.एन. 86-600, को-जे.एन. 86 572, को-94008 तथा को-99004 का चुनाव करें।

अधिक उपज प्राप्त करने हेतु प्रमुख बिन्दु: गन्ना फसल हेतु 8 माह की आयु का ही गन्ना बीज उपयोग करें। शरदकालीन गन्ना (अक्टूबर-नवम्बर) की ही बुवाई करें।

गन्ना की बुवाई: कतार से कतार 120-150 से.मी. दूरी पर गीली कूड़ पद्धति से करें। बीजोपचार (फफूदनाशक-कार्बेन्डाजिम 2 ग्र. प्रति ली. एवं कीटनाशक-क्लोरोपायरीफास 5 मि.ली./ली.15-20 मि. तक डुबाकर) ही बुवाई करें। जड़ी प्रबंधन के तहत-टूट जमीन की सतह से काटना, गरेड़ तोड़ना, फफूदनाशक व कीटनाशक से टूट का उपचार, गेप फिलिंग,

संतुलित उर्वरक (एन.पी.के.-300:85:60) का उपयोग करें। गन्ने की फसल के कतारों के मध्य कम समय में तैयार होने वाली फसलों चना, मटर, धनिया, आलू, प्याज आदि फसलें लें खरपतवार नियंत्रण हेतु ऐट्राजिन 1.0 कि.ग्रा./हे. सक्रिय तत्व की दर से बुवाई के 3 से 5 दिन के अंदर एवं 2-4-डी 750 ग्रा./हे. सक्रिय तत्व 35 दिन के अंदर छिड़काव करें। गन्ना उत्पादक क्षेत्रों में टपक सिंचाई पद्धति को प्रोत्साहन दिया जाए। गन्ना क्षेत्र विस्तार हेतु गन्ना उत्पादक किसानों के समूहों को शुगर केन हारवेस्टर, पावर बडचिपर एवं अन्य उन्नत कृषि यंत्रों को राष्ट्रीय कृषिविकास योजना अंतर्गत 40 प्रतिशत अनुदान उपलब्ध कराया जाना चाहिये।

– आर एस सेंगर एवं वर्षा रानी

कृषि जैव-प्रौद्योगिकी विभाग,

सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
मेरठ।

स्ट्रॉबेरी – आय एवं पौष्टिकता का सबसे बढ़िया स्रोत

स्ट्रॉबेरी के फल बड़े लुभावने, रसीले एवं पौष्टिक होते हैं। इसके फल सामान्यतः 10-15 ग्राम के होते हैं जो कि बहुत ही मुलायम होते हैं। इसमें विटामिन सी और लौह तत्व प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। यह अपने गुणों के साथ साथ औषधीय गुणों से भी भरपूर होता है। कई प्रकार के उत्पाद जैसे कि जाम, जेली, कैंडी, आईसक्रीम इत्यादि को बनाने में भी इसका उपयोग किया जाता है। यह अल्प अवधि में ही फलत देने वाली फसल है जिससे कि अन्य फलों की तुलना में अधिक आय देने वाली होती है। उपयुक्त प्रजाति के चुनाव तथा इसके अच्छे फसल से प्रबंधन उत्पादन क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। अतः इसके उत्पादन एवं पौष्टिक महत्व को ध्यान में रखते हुए इसकी खेती करना किसान भाइयों के लिए लाभप्रद हो सकता है।

स्ट्रॉबेरी (फ्राईगरिया • अनानास) एक सुगंधित फल है जो अपनी विशिष्ट सुगंध और स्वाद, रसदार, बनावट और मिठास के लिए जाना जाता है। यह गुलाब परिवार रोजेसी से संबंधित है। शब्द 'स्ट्रॉबेरी', किसान द्वारा पुआल का प्रयोग नमी बनाए रखने, कीटों, रोगों के विकास को रोकने, फल को साफ और ताजा रखने के लिए तथा पौधे के वृद्धि को बढ़ाने, आदि के लिए करता है, के अभ्यास से लिया गया है। यह 98% खाद्य भाग के साथ एक पूर्ण फल है। स्ट्रॉबेरी का सेवन ताजा और प्रसंस्कृत रूप में किया जाता है जैसे कि जैम, जेली, जूस, कैंडी, फ्रोजन, सूखे और कई अन्य इत्यादि। इस फसल की खेती धीरे-धीरे सभी क्षेत्रों में फैल रही है।

पोषक महत्व: स्ट्रॉबेरी के फल में शर्करा, अम्ल, रेशा, और सुगंधीय अवयव पाए जाते हैं। इसके फल विटामिन (सी और के) और एंटीऑक्सिडेंट्स के अच्छे स्रोत होते हैं। उपभोक्ताओं को इसके फलों से अनोखा स्वाद और खुशबू पसंद आती है। कृत्रिम